भारतीय संगीत एवं संस्कृति

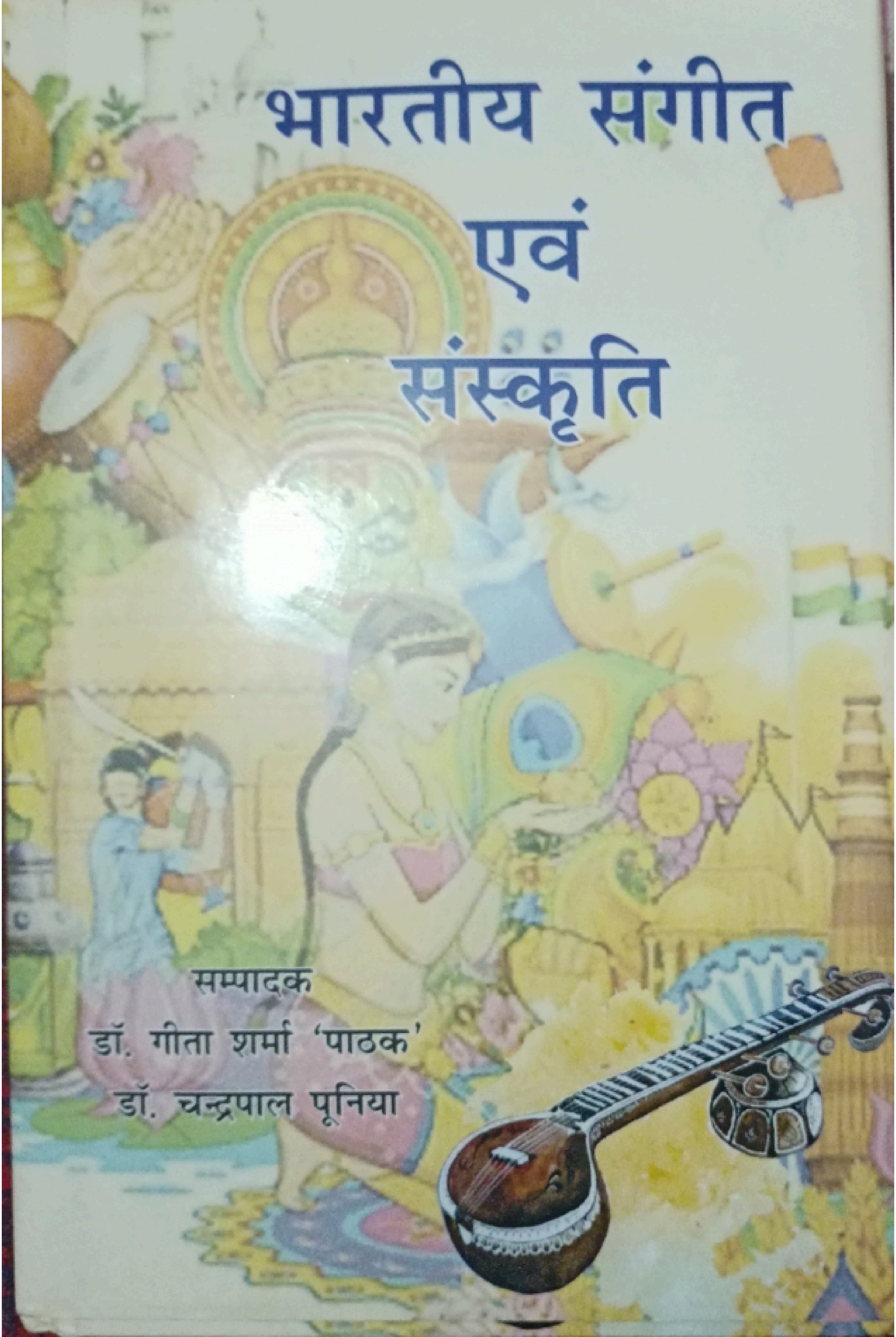

सम्पादक

डॉ. गीता शर्मा 'पाठक'

डॉ. चन्द्रपाल पूनिया

मनुष्य पृथ्वी पर ईश्वर की सबसे अनूठी कृति है और उसने अपनी उपस्थिति को अनेक माधुर्य और लालित्य के रूप में संगीत, कला, संस्कृति और सभ्यता के माध्यम से सार्थक दर्पण के रूप में स्थापित किया है। संगीत, कला और सभ्यता संस्कृति का एक ऐसा सा दृश्य प्रतिबिम्ब है, जिसकी छटा व्यक्ति के व्यवहार और भावों में झलकती है। संगीत और सभ्यता का उद्‌भव इस धरा पर अन्नत काल से है, जिसके माध्यम से अनेक नूतन क्षेत्रों का उत्थान हुआ है, जो सभ्य और आदर्श समाज की आधारशिला है।

भारतीय संगीत और सभ्यता का स्वरूप क्रियात्मक एवं मोहक प्रवृत्ति का है जो सभी को आन्नदमयी वात्सल्य और शालीनता से आकर्षित करता है। इन दोनों का आपसी सान्निध्य भारतीय संस्कृति को प्रतिष्ठित रूप प्रदान करता है। मनुष्य के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संगीत विद्यमान है। संगीत, संचार और सम्प्रेषण का एक महत्वपूर्ण साधन भी है जो आगन्तुकों के लिए एक आदर्श मार्ग प्रशस्त करता है।

वर्तमान समय में आम जनमानस को भारतीय संगीत और सभ्यता के आकृष्ठ करना इस पुस्तक का मूल उद्देश्य है। इस पुस्तक में अनेक ऐसे अनुभवी विद्वानों और प्रेरक व्यक्तित्व के विचारों का संग्रह है, जो समाज में संगीत और संस्कृति के प्रति सकारात्मक और सृजनात्मक स्वरूप को स्थापित करने में कुशल योगदान प्रदान करेंगे।

₹ 795

ISBN 978-93-86695-32-1

9789386695321

आर्यन पब्लिकेशन

110, गली नं. 4, हरफूल विहार,

बापरौला, नई दिल्ली-110043

फोन : 9891896483

ईमेल: aryanpublication12@gmail.com

अनुक्रम

मूल्यांकन एवं परामर्श मण्डल 9

भूमिका 11

1. सांग में संगीत विधान 15
   – डॉ. पूर्णचन्द शर्मा

2. समय चक्र एवं रागों का विभाजन 33
   – डॉ. गौरी खन्ना

3. लोक संगीत का उद्भव एवं विकास 47
   – डॉ. पुष्पा रानी

4. हरियाणा की कला, संस्कृति एवं संगीत 55
   – डा. भारती

5. हरियाणवी लोकगीतों का बदलता स्वरूप 65
   – डॉ. मंदीप कौर

6. भारतीय लोकतंत्र में संचार माध्यम की भूमिका 74
   – डॉ. रीनू शर्मा

7. हिन्दी साहित्य और सिनेमा 81
   – डॉ. मीनाक्षी

8. हमारी सभ्यता और संस्कृति का प्रतीक–हरियाणा का लोकसंगीत – डॉ. दर्शना 89

9. सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना में जनसंचार माध्यमों की भूमिका – डॉ. भारती 101

10. हरियाणा के लोक गीतों पर चर्चा – डॉ. रजनी मलिक 109

11. हरियाणा : लोक सांगीतिक दर्शन – डॉ. अमित कुमार 'धर्म' 122

12. हरियाणा की संस्कृति का अंग–लोकगीत – डॉ. रचना 134

13. सांग–सिरमौर : निहालचंद – योगेश कुमार एवं उषा 142

14. शास्त्रीय संगीत के संवर्धन में हरियाणा के आकाशवाणी केंद्र व प्राइवेट संस्थाओं की भूमिका एक विश्लेषणात्मक अध्ययन – अशिन 150

15. हरियाणवीं लोकनाट्य साँग – महिमा शर्मा 166

16. पं० हरविन्दर शर्मा का सितार वादन, शिक्षा और शिक्षा विस्तार: एक अध्ययन – रामदिया 177

17. नृत्य एवं कथक की उत्पति एवं विकास : एक अध्ययन – वीर विकास 188

18. हरियाणा बी. एड. कोर्स में संगीत विषय की उपयोगिता – राकेश 199

19. आज के दौर में संगीत शिक्षा– चुनौतियां और नवीन प्रयोग – संध्या शर्मा 210

4

हरियाणा की कला, संस्कृति एवं संगीत

डा. भारती

1 नवम्बर 1966 को हरियाणा भारत का एक राज्य बन गया, इसलिए 1 नवम्बर को हरियाणा दिवस के रूप में भी जाना जाता है। वर्तमान हरियाणा, वह क्षेत्र है, जहाँ सरस्वती नदी के किनारे वैदिक सभ्यता शुरू हुई और परिपक्व हुई। यही वेद लिखे गए क्योंकि आर्यों ने यहाँ पर ही उनके पवित्र मंत्रों का जाप किया। हरियाणा का इतिहास 5000 साल पुराना तथा गौरव से भरा हुआ है। यही पर भगवान श्री कृष्ण ने महाभारत के युद्ध की शुरूआत में भगवद्–गीता का प्रचार किया।

हरियाणा को 'देवताओं का घर' के रूप में भी जाना जाता है, क्योंकि हरि का अर्थ है भगवान और अयाना का अर्थ है घर। हरियाणा एक जीवंत और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है जो आंगतुकों को वैदिक काल की अनुभूति देता है।

हरियाणा की कला एवं शिल्पः– हरियाणा के हस्तशिल्प में विभिन्न प्रकार की शैली और स्वभाव शामिल है। कला के ये कार्य अर्थात् हरियाणा के प्रसिद्ध हस्तशिल्प अपने शानदार सौंदर्य मूल्य के लिए पूरे

सहायक प्रोफेसर, संगीत (वादन), राजकीय महिला महाविद्यालय, करनाल

देश में जाने जाते हैं। हरियाणा के हस्तशिल्प में मुख्य रूप से मिट्टी के बर्तनों, कढ़ाई और बुनाई, फुल्कारी चोप्प, डयूरी बाग और पेंटिग शामिल है। इनमें से अधिकांश अनिवार्य रूप से ग्राम हस्तशिल्प है। हरियाणा अपने बने हुए कार्यो के लिए सबसे प्रसिद्ध है। हरियाणा में हस्तशिल्प निर्माता मिट्टी के बर्तन बनाने, उत्तम फर्नीचर और लकडी की नक्काशी, हथकरघा आदि सहित कई तरह की कला और शिल्प पेश करते हैं। ज्यादातर लोकप्रिय बुनाई वाले हथकरघा शॉल और दुपट्टे है। हरियाणा शॉल फुलकारी की वजह से बहुत प्रसिद्ध है, जिसकी दुनिया भर में इसकी समृद्ध कढ़ाई की बहुत माँग है।

हरियाणा की संस्कृति :– हरियाणा के लोग अपने रीति रिवाजों और सांस्कृतिक परम्पराओं का सख्ती से पालन करते हैं। वैदिक मंत्र एवं योग उनकी जीवन शैली का अहम हिस्सा बन चुका है। हरियाणा की बोली, जिसे हरियाणवी के नाम से जाना जाता है। हरियाणा में सभी वर्गों के साथ सम्मानजनक व्यवहार किया जाता है। इस प्रकार यह एक बहुत ही समाजवादी प्रकृति को प्रदर्शित करता है। हरियाणा के कुछ राज्यों मे व्यक्ति की आर्थिक स्थिति उनके मवेशियों की संख्या एवं जमीन पर निर्धारित की जाती है। यहाँ के लोग एक ही गोत्र में विवाह की अनुमति न देकर अपनी नस्लीय पवित्रता बनाए रखते हैं। विधवा पुर्नविवाह को भी प्रोत्साहित नहीं किया जाता है। वर्तमान समय में धीरे–धीरे पढ़े लिखा वर्ग अब कुछ प्रथाओं को नहीं मानता अर्थात् जैसे पुर्नविवाह को अनुमति न देने की प्रथा, लड़कियों को ना पढ़ाने की प्रथा, शिशु हत्या इत्यादि का विरोध करता है।

हरियाणा प्रदेश के मुख्य मेले एवं त्यौहार :– हरियाणा राज्य में विभिन्न मेलों और त्यौहारों को धूमधाम एवं उल्लास से मनाया जाता है। हरियाणा में कई मेले और त्यौहार ऐसे हैं जो साल के अलग–अलग समय में बडी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। ये त्यौहार उत्सव, मौज मस्ती से भरपूर होते है।

सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय मेला :– हर साल फरवरी के महीने में

हरियाणा पर्यटन विभाग एक सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन करता है जिसे सूरजकुंड मेले के नाम से जाना जाता है। इस मेले का एकमात्र मकसद हमारे देश में मौजूद पारम्पारिक कला और प्रतिभा को बढ़ावा देना है।

आम का मेला :– पिंजौर के यादविंद्रा गार्डन में जून और जुलाई के महीने में आयोजित किया जाने वाला मेला आम प्रेमियों के लिए अति उत्तम है क्योंकि इस मेले में न केवल विभिन्न प्रकार की आम की किस्मों को दिखाया जाता है बल्कि किसानों को अपने आम को बेचने और उन्हें आम उत्पादन बढ़ाने के लिए नवीनतम तकनीक के बारे में भी सिखाया जाता है।

बैसाखी मेला :– यह मेला 13–14 अप्रैल को हरियाणा टूरिज्म द्वारा पिंजौर गार्डन में आयोजित किया जाता है। उत्सव के लिए आगंतुकों का एक बडा समूह उत्साह और मस्ती के साथ इकट्ठा होता है।

पिंजौर हेरिटेज फेस्टीवल (मेला) :– हर साल दिसम्बर में हरियाणा की जीवंत और समृद्ध संस्कति का जश्न मनाने के लिए पिंजौर हेरिटेज़ फेस्टीवल मनाया जाता है। इस मेले में गायक, कवि नर्तक, अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। यह एक शानदार वार्षिक आयोजन है जो पुराने पिंजौर शहर और उसके शानदार उदयानों के इतिहास और विरासत पर केन्द्रित है।

हरियाणा के त्यौहार :– विभिन्न अवसरों और कार्यक्रमों का जश्न मनाने के लिए, हरियाणा में कई जीवंत त्यौहार है। इन त्यौहारों में तीज़, गुग्गा नवमी, गीता जयंती, कार्तिक सांस्कृतिक महोत्सव, हरियाणा महोत्सव और सोहना कार रैली के रूप में एक अनूठा उत्सव शामिल है। हरियाणा में तीज एक प्रसिद्ध त्यौहार है यह श्रावण महीने में मनाया जाता है। पूरे राज्य में यह त्यौहार बहुत धूमधाम और उत्साह से मनाया जाता है। बागों में झूले लगाए जाते है और लड़कियाँ हाथों पर मेंहदी लगाती है। युवा लड़कियाँ और महिलाएँ हरे रंग की चूडियाँ और हरे रंग के वस्त्रों को धारण करती है। इसी तरह अंतर्राष्ट्रीय गीता जयन्ती का महोत्सव भी बडी धूमधाम से मनाया जाता है। यह महोत्सव दिसम्बर माह में आयोजित

किया जाता है। यह गीता जयंती समारोह है जिसमें भगवद् गीता सेमिनार और थियेटर समूहों द्वारा भजन कीर्तन का आयोजन ब्रह्मस पर किया जाता है। इस समारोह में भगवद् गीता और भगवान श्री कृ का स्मरण करते हैं। गीता जयन्ती के अवसर पर यहाँ प्रदर्शनी आयोजन किया जाता है जिसमें हरियाणा अथवा दूसरे राज्यों से लोग अपनी कला और संस्कृति का प्रर्दशन करते हैं।

हरियाणा का लोकसंगीत (गायन वादन एवं नृत्य) :- हरियाणा में संगीत की परम्परा वैदिक काल में चली आ रही है। हरिया में लोक संगीत की समृद्ध परम्परा है जो हमारे समाज के सभी वर्गों जरूरतों को मुख्य रूप से कृषि और मार्शल पृष्ठभूमि के साथ पूरा कर है। हर महीने मौसम और हर मौके के लिए एक गाना है। उत्तर भा में लगभग हर महीने बारह महीनों तक गीत गाए जाते हैं। हमें आषाढ़ बादलों, श्रावण की वर्षा, कार्तिक के दीपों की रोशनी, माघ की बसंत फाल्गुण के रंगों के त्यौहार का वर्णन मिलता है। हरियाणा के लो संगीत को मुख्य दो श्रेणियों में बांटा जाता है। (क) शास्त्रीय रूप (ख) दे का संगीत, शास्त्रीय रूप मूल रूप से पौराणिक कथाओं के गीतों पर जै आल्हा, जयमल–फत्ते, बारह मास, तीज, फाग और होली गीत, देश के संगीत में पौराणिक कथाओं जैसे पूर्ण भक्त, औपचारिक गीत, मौसम गीत, गाथा गीत आदि शामिल है।

हरियाणा में कई अलग–अलग लोक गायन शैलियाँ प्रचलित है जिसका वर्णन इस प्रकार है :–

आल्हा :– आल्हा राग के रचयिता जगनीक को माना जाता है। आल्हा राग सर्वसाधारण से लेकर व्यवसायी संगीतज्ञ सब गाते हैं। यह प्रबन्ध, लय, ताल व छंद की दृष्टि से ही लोक संगीत की शैली बन पाया है। इसके गायन से वीर, रौद्र तथा अदभुत रस की निष्पत्ति होती है।

किस्सा राग :– नरसी भगत, हरफूल जाट, ध्रुव भक्त, पूर्ण भक्त, ढोला मारु आदि के किस्सों को लेकर जो गायन किया जाता है। वह किस्सा राग कहलाता है। इसकी गायकी सारंगी, ढोल तथा मंजीरे पर

होती है। श्रावण मास इस गान का उपयुक्त समय है।

गुग्गा राग :– यह गुग्गा पीर की गाथा है। गुग्गा नवमी के दिन गुग्गा पीर के सम्प्रदाय वाले एक लम्बे बांस पर रंग बिरंगे दुपट्टे बांध कर गायन करते हुए द्वार–द्वार जाते हैं। लोक भाषा में इस बाँस को गुग्गा पीर की छडी कहते हैं। इस गायन में ढोलक, मंजीरा तथा लोकवाद्य डेरु का प्रयोग किया जाता है।

साँग :– यह हरियाणा प्रदेश के लोक रंगमंच का अंश है भारतीय नाट्यकार आधुनिक रंगमंच के लिए इस विद्या का प्रयोग कर रहे है। वर्तमान समय में तो इस लोक विद्या को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिताओं की विधाओं में रखा जाता है। इससे पहले तो साँग गाँव की चौपालों में ही किए जाते थे और गाँव के लोग ही इसका आनन्द ले पाते थे।

इस विद्या में साँगी अपना अभिनय रागिनी के द्वारा करता है तथा बीच–बीच में वादक उसी गीत की टेक को दोहराते हैं। साँग में संगीत के पात्रों का चयन उनके गायन की क्षमता को देखकर किया जाता है और उस पात्र विशेष को साँगी की संज्ञा दी जाती है।

रागिनी :– पं. लक्ष्मीचन्द ने हरियाणवी रागिनी को जन्म दिया है, हरियाणवी रागिनी में शब्द, क्रम, उपमा, प्रयोग, मार्मिक कल्पना, लय प्रवाह की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है।

मुक्तक संगीत :– मुक्तक लोकगीत हरियाणा का लघु संगीत है। संस्कारों में जन्म से लेकर मृत्यु तक ये गीत सभी घरों में गाए जाते है। इन लघु गीतों का संगीत समय, स्थान और परिस्थितियों के अनुसार उपयुक्त लय, भाव और प्रवाह में परिवर्तित हो जाता है।

लोक संगीत का प्राण लय को जाना जाता है। इसी लय के आधार पर ही लोकगीतों का निर्माण हुआ। हरियाणा की भूमि वीरों की भूमि कहलाती है। वाद्य विभिन्न प्रकार के रसों को उत्पन्न करते है जैसे वीर, रोद्र, करुण, श्रृंगार, इत्यादि। लोक संगीत में शास्त्रीय रागों की प्रधानता न होकर ताल और लय की प्रधानता ही अधिक होती है। लोक गीतों में

जहाँ भैरवी, भैरव, काफी, पहाड़ी, भूपाली, चन्द्रकौंस, पीलू इत्यादि रागों पर आधारित होते हैं। वहीं दादरा, कहरवा, खेमटा, रुपक, तीन ताल आदि तालों को विभिन्न लोक वाद्यों पर धुनों के अनुरूप बजाया जाता है।

हरियाणा में विभिन्न वाद्यों का प्रयोग विभिन्न अवसरों पर होता है जिसका वर्णन निम्नलिखित प्रकार से है :–

ढोलक :– ढोलक वाद्य का प्रचलन काफी पुराना है। इसका प्रयोग लोक गीतों एवं विभिन्न नृत्यों जैसे धमाल, फाग, होली के साथ होता है तथा मन्दिर में भजन कीर्तन में एवं शादी के अवसर पर स्त्रियों द्वारा किया जाता है। लोक नाटकों (साँग) में भी इस वाद्य का प्रयोग किया जाता है।

ढोल :– हरियाणा के प्राचीन वाद्यों में ढोल वाद्य काफी प्रचलित। यह ढोलकी वाद्य का बड़ा रूप है। ढोल वाद्य का वादन पशु मेले, नीलामी कुश्ती, खेल, तमाशे, विवाह, जन्म, मुण्डन संस्कार, बसंत पंचमी विभिन्न अवसरों पर किया जाता है। ढोल वाद्य को प्रसन्नता का प्रतीक माना गया है।

नगाड़ा :– लोक संगीत में प्रयुक्त होने वाला वाद्य नगाड़ा भी अति प्राचीन वाद्य है। नगाड़े वाद्य का प्रचलन साँग तथा रागणियों के साथ होता है। इस वाद्य का प्रयोग हरियाणा के युवा महोत्सव में हरियाणवी वादयवृन्द में मुख्य रूप से होता है। इस वाद्य का प्रयोग प्राचीन समय में राजा महाराजाओं की उद्घोषणाओं के समय व युद्ध के समय किया जाता था।

डेरु :– डेरु लोक वाद्य का प्रयोग पारम्पारिक गुग्गा भक्त (गाथा) गायन के साथ होता है इसके अतिरिक्त इस वाद्य का प्रयोग हरियाणवी वाद्यवृन्द में तथा एकल वाद्य के रूप में भी होता है। डेरु वादक बाँस की लचकदार खपचियों से डेरु बजाता है और बीच–बीच में ताल के अनुरूप डोरियों को दबा–दबा कर ध्वनि एवं स्वर को ऊँचा नीचा करता है।

सारंगी :– हरियाणा के लोक संगीत में इस वाद्य का प्रयोग रागिनी, किस्सा राग व गुग्गा गायन में होता है। यह वाद्य शास्त्रीय

संगीत के प्रदर्शन में व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है। यह वाद्य हरियाणा के संगीत का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

चिमटा :– यह एक पांरपरिक संगीत वाद्ययन्त्र है चिमटा जोगियों और संतों का लम्बा साथी रहा हे जो जगह–जगह घूमते रहते थे। यह वाद्ययन्त्र जगरातों, मन्दिरों के अतिरिक्त नवरात्रों में बजाया जाता है। आजकल यूथ फेस्टीवल में हरियाणवी वाद्यवृन्द में इसका प्रयोग हो रहा है।

ताशा :– ताशा वाद्य का प्रयोग हरियाणा में जलसों, जलूसों, बाजीगर के तमाशों, विवाह आदि के अवसर के अतिरिक्त हरियाणवी वाद्यवृन्द में भी होता है।

शंख :– शंख वाद्य का प्रयोग मन्दिर की आरती के साथ होता है।

बीन :– बीन प्राचीन वाद्य है यह सपेरों का वाद्य है इसका प्रयोग लोकनृत्यों एवं सांग के साथ होता है।

अलगोजा :– अलगोजा प्राचीन वाद्य है इसका प्रयोग लोकसंगीत में लोकगायन, लोकनृत्य के साथ संगत के रूप में एवं स्वतन्त्र रूप में होता है।

घड़ा :– हरियाणा के लोक वाद्यों में घड़े का प्रमुख स्थान है, इसका प्रयोग मुख्यतः रागिनी, हरियाणवी वाद्यन्त्र में ताल देने के होता है, घड़े के मुख पर रबड़ का टुकड़ा बाँध कर बजाते है, कुछ कलाकार कभी–कभी बिना रबड़ के घड़े को बजाते है।

हरियाणा के लोक नृत्यों ने भारतीय संस्कृति में अपनी विशेष जगह बनाई हुई है। हरियाणा के कुछ प्रमुख नृत्यों का संक्षिप्त वर्णन निम्न प्रकार से है :–

फाग नृत्य :– फाग या फाल्गुन नृत्य हरियाणा के कृषि लोक द्वारा फरवरी–मार्च महीने में किया जाता है। इस समय के दौरान लोगों के लिए बुवाई और कटाई की अवधि के बीच थोड़ा आराम का समय होता

है। यह नृत्य भगवान श्री कृष्ण के समय का है जो अपनी गोपियों के साथ किया करते थे। यह नृत्य किसानों की फसल का जश्न मनाता है और अनिवार्य रूप से आनन्द और आनन्द की अभिव्यक्ति है। इस नृत्य में पुरुष अधिक रंगीन पगड़ी पहनते है जबकि महिलाएं रंगीन पारम्परिक परिधान डालती है।

लूर नृत्य :– यह नृत्य हरियाणा का प्रसिद्ध नृत्य है जोकि बच्चे के जन्म पर या शादी के अवसर पर किया जाता है। इसमें भाग लेने वाली सभी लड़कियाँ होती है। यह दो पक्तियों में अर्धवृत्त के रूप में एक दूसरे के सामने खड़ी होती है। एक पक्ष एक गीत शुरू करता है तुम्हारी बहू ने बेटी को जन्म दिया और बेटे का जन्म इसी ओर हुआ है, क्यों न दोनों का विवाह किया जाये। नृत्य की शुरूआत इसी गीत से शुरू होती है और काफी समय वह इस समस्या पर चर्चा करते है और अंत में प्रस्ताव स्वीकार कर लिया जाता है। यह नृत्य होली त्यौहार के आस–पास किया जाता है।

घूमर नृत्य :– यह नृत्य लड़कियों द्वारा विभिन्न त्यौहारों पर किया जाता है जैसे होली, गणगौर पूजा और तीज़ इत्यादि। इस नृत्य का मुख्य चरण एक सर्कल में धीरे–धीरे गोल चक्कर लगाना है। कभी–कभी वे दो पक्तियों का निर्माण करते है। नृत्य के अंत में टैम्पो बढ़ता है जबकि नर्तकियाँ जोड़े में ही धूमती है।

गुग्गा नृत्य :–गुग्गा पीर की याद में निकाले गए जलूस में एक अनुष्ठानिक नृत्य है। यह नृत्य हिंदुओं और मुसलमानों दोनों द्वारा किया जाता है। भक्तों के एक समूह को मुख्य नर्तक चुना जाता है वे अपने स्वयं के संगीत वाद्ययंत्रों जैसे डेरु, थाली, चिमटा आदि को लेकर जाते है। यह नृत्य केवल पुरुषों द्वारा किया जाता है। इस नृत्य के माध्यम से गुग्गा संत की स्मृति करते है।

खोड़िया नृत्य :– यह नृत्य हरियाणा का प्रसिद्ध लोकनृत्य है। यह नृत्य शादियों और अन्य शुभ अवसरों पर किया जाता है। नर्तकियों का एक समूह होता है जो इस नृत्य को करता है। गीत इस नृत्य की

सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। वास्तव में यह नृत्य सबसे तेज गति में किया जाने वाला नृत्य है।

धमाल नृत्य :– जब फसल कटाई के लिए तैयार होती है तो किसान संतुष्टि के लिए खेतों का सर्वेक्षण करता है। धमाल नृत्य पुरुषों द्वारा किया जाता है। इस नृत्य में पुरुष अपनी खुशी का इजहार करते है इस नृत्य में नृर्तक नगाडा ढोल और ताशा वाद्य की थाप पर नृत्य करते है। नर्तक अर्ध चक्र में खड़े होकर भगवान, विष्णु, ब्रह्मा और महेश के आगे सिर झुकाकर आर्शीवाद प्राप्त करते है। फिर धीरे–धीरे टैम्पों में उठते है और नृत्य करते है। कुछ नर्तक अपने हाथों में डफ लेकर नाचते जाते है यह नृत्य लोक नृत्यों की तरह सरल है। इस नृत्य की सबसे स्थायी अभिव्यक्ति है कूदकर आनंद लेना।

हरियाणा के निवासियों ने आज भी अपनी संस्कृति, कला को बचा के रखा हुआ है। हरियाणा के लोक कलाकारों ने हरियाणाा की लोक संगीत परम्परा को अभी तक कायम रखा है। हरियाणा की कला, संस्कृति एवं संगीत का प्रयोग राष्ट्रीय स्तर पर किया जाता है, जैसे भारत विकास परिषद्, युवा महोत्सव, गीता जयंती, फरीदाबाद में सूरज कुंड के मेले में हरियाणवी सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ–साथ, कला के अंतर्गत शिल्प, मिट्टी के बर्तनों, कढ़ाई, पेंटिंग आदि की प्रर्दशनी भी लगाई जाती है। हरियाणा की सांस्कतिक धरोहर को लोगों ने अभी तक संजो कर रखा हुआ है। इसका ज्वलन्त उदाहरण कुरुक्षेत्र युनिवर्सिटी में धरोहर संग्रहालय है जो हरियाणवी संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को दर्शाता है। इस संग्रहालय में पुरातात्विक धरोहर, लोक संगीत वाद्ययन्त्र, दीवार पेंटिंग, पांडुलिपियाँ, कला शिल्प इत्यादि सभी को दर्शाया गया है।

सन्दर्भ सूची

1. Department of Public Relations, Folk Music of Haryana, Brochure : Chandigarh
2. Department of Public Relations, Fairs and Festivals of Haryana, Brochure : Chandigarh

3. Sagwan, G. Haryanvi Lok Geeton ka Sanskritik Adhya
Brochure Chandigarh : Haryana Sahitya Academy
4. हरियाणा का लोक संगीत, रीता धनकर पृ. 78
5. भारतीय संगीत वाद्य, लालमणि मिश्र पृ. 176
6. हरियाणा, डी. सी. वर्मा, पृ. 62
7. Dance | Page 1 | Art and Cultural Affairs Departme
Govt. of Haryana